Pāli Study Series - 1

Universal Message of Buddhist Tradition

(With Special Reference to Pāli Literature)

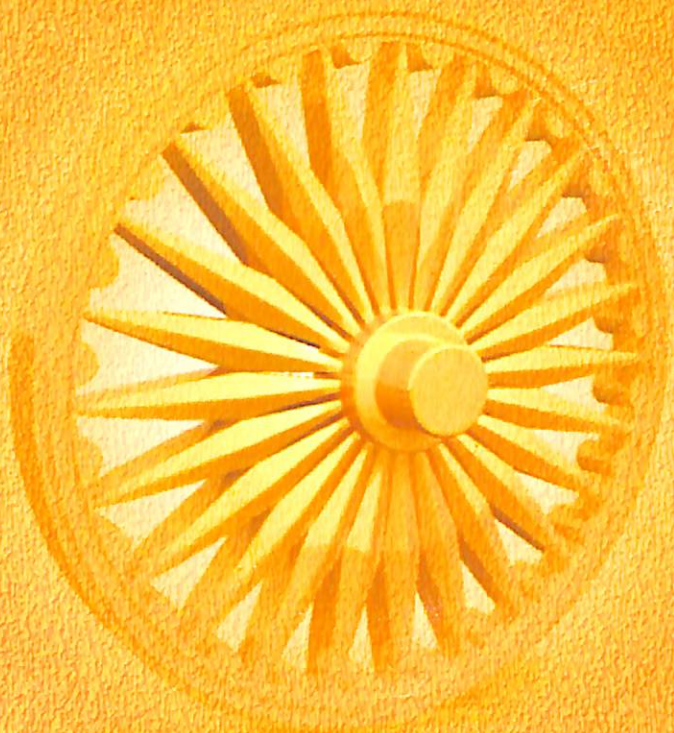

Prof. Radhavallabh Tripathi

Rashtriya Sanskrit Sansthan
Deemed University
Under M/O Human Resource Development, Govt. of India
New Delhi

PREFACE

मङ्गलमूर्तिः सततं वितरतु भद्रं परम्पराऽस्माकम्।
पालि-प्राकृत-संस्कृत-भाषासङ्गमसरस्वतीव॥
मैत्री-मुदिता-करुणोपेक्षा श्लिष्टा विभान्तु नित्यं ताः।
चतुष्टयीयं पाली घटयतु सुसंस्कृतं विश्वम्॥

There is an incidence narrated in *Pāli Mahāvagga* of *Vinayapiṭaka* about a discourse that *Buddha* gave on meditation and transcendence of suffering. "Suffering is only one face of life"— he said— "life has another face — the face of wonder. If we can see that face of life, we will have happiness, peace and joy. When our hearts are unfettered, we can make direct contacts with wonders of life. When we have truly grasped the truths of impermanence, emptiness of self and dependent co-arising, we can see how wondrous our own hearts and minds are."[1]

With this simplicity that reveals his insight into the mysteries of life and creation, *Buddha* delivered his discourses more than two thousand and five hundred years ago in India. The unique nature of his discourses lies in presenting the logistic view of life and putting up its whole complexity in simplest of terms. His sayings are marked with a genuine concern for the sufferings of humanity and with a resolve to find out remedial measures. Who else, but *Buddha*, could have presented the four noble truths of life in this way — that there is suffering, suffering has its cause, suffering could be put to cessation and there is a path for the cessation of suffering. It was again *Buddha* who designed the eightfold path for putting the suffering to cessation — viz. — Right vision, Right resolution, Right speech, Right effort, Right livelihood, Right conduct, Right mindfulness and Right meditation.

Pāli is said to have been the language in which *Siddhartha Gautama* after becoming the *Buddha*, delivered his sermons showing the only possible way to the humanity at large to free itself from the shackles of sorrow. The discourses of Buddha were latter collected in *Tripiṭakas*.

Tripitakas are universally acknowledged as the most authentic source books of *Buddha*'s sermons. The name *Tripiṭaka* is said to have been given to these holy

---

1. Q. by Dr. Lokesh Chandra & Daisaku Ikeda in Buddhism : A Way of Valus, New Delhi, 2009.

बहुनं वत अत्थाय माया जनयि गौतमं।
व्याधि मरणं तुन्नान दुक्खक्खन्धं व्यपुनादि।।[1]

अर्थात् - बहुतों के कल्याण के लिए माया ने गौतम को जन्म दिया। व्याधि एवं मरण से पीड़ित जनों की दु:ख-राशि को उसने नष्ट किया।

बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ ने अपने बचपन में मानव-जीवन की तीन दु:खमय अवस्थाओं (रोग, वृद्धता एवं मृत्यु) को देखकर विचार किया कि क्या वृद्धावस्था का दु:ख, बीमारी का कष्ट एवं मृत्यु का दु:ख - यही मनुष्य का प्राप्य है? क्या इस दु:ख से बचने का कोई उपाय नहीं है? क्या मुझे एवं उन सबको जिन्हें मैं प्यार करता हूँ वृद्धावस्था, बीमारी एवं मृत्यु का कष्ट भोगना पड़ेगा? इन प्रश्नों की सत्य-खोज के लिए सिद्धार्थ ने संन्यासी जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ किया और कठिन तपस्या की। परन्तु कठिन तपस्या से भी उन्हें सत्य की लब्धि नहीं हो सकी तब एकाग्र होकर एक वटवृक्ष के नीचे वे ध्यानावस्था में बैठ गये तब उन्हें वैशाख-पूर्णिमा के दिन '*सम्बोधि*' (बुद्धत्व) की प्राप्ति हुई।

'*सम्बोधि*' (*बुद्धत्व*) की प्राप्ति के बाद, वे 'बुद्ध' कहलाने लगे। बुद्ध के रूप में वे आजीवन *बहुजन-हिताय बहुजन-सुखाय* का उपदेश जनता-जनार्दन को देते रहे तथा स्वयं लोक-मंगल (जन-कल्याण) का कार्य करते रहे। उनके उपदेशों में मानवीय-मूल्यों, आध्यात्मिक एवं सामाजिक-आदर्शों की शाश्वतता इतनी अधिक है कि - अतीत की भाँति आज भी वे मानव मात्र के उत्थान, विकास और मंगल के लिए प्रासंगिक हैं।

बौद्ध-दर्शन बुद्ध एवं उनके अनुयायियों का दार्शनिक-चिन्तन है। वस्तुत: बुद्ध के व्यक्तित्त्व, दार्शनिक-चिन्तन तथा नैतिक-उपदेशों में वह शक्ति निहित थी कि अनेक दार्शनिकों ने उनके आदर्शों और विचारों से प्रभावित होकर अपने-अपने शास्त्रों की रचना की। बुद्ध के दिव्य-विचारों से प्रभावित होकर एक ओर *अश्वघोष, बुद्धघोष, कुमारलब्ध, असंग, वसुबन्धु, नागार्जुन, आचार्य शान्तिदेव, दिङ्नाग* एवं *धर्मकीर्ति* जैसे तार्किक एवं दार्शनिक पुरुष भारतीय-दार्शनिक मणिमाला में महनीय आस्पद पर अधिष्ठित हुए, वहीं दूसरी ओर *अशोक, कनिष्क, हर्षवर्धन और महात्मा गाँधी* प्रभृति कर्मयोगियों के सृजन में भी यह प्रेरक आदर्श निमित्त बना। इन कर्मयोगी पुरुषों ने लोक-मंगल के लिए विविध प्रकार के कार्य निष्पादित किये।

गौतम बुद्ध महान् चिन्तक, समाज-सुधारक और लोक-कल्याण के पुरोधा थे। उनके चिन्तन में मानव-मूल्यों पर आधारित स्वतन्त्रता, मानव-मात्र में समानता, विश्व-बन्धुत्व,

---

1. *थेरीगाथा–महापजापति गोतमी गाथा–पालि-प्राकृत-अपभ्रंश संग्रह*, प्रकाशक- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1983 ई., पृ. 81

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058